17 दिसम्बर 2010, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-61 / 2009-11

जैन
पथप्रदर्शक
ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

भगवान आत्मा की बात समझाना, भगवान आत्मा के दर्शन करने की प्रेरणा देना, अनुभव करने की प्रेरणा देना, आत्मा में ही समा जाने की प्रेरणा देना ही सच्चा प्रवचन है।
- गागर में सागर, पृष्ठ-38

वर्ष : 33, अंक : 18 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये
दिसम्बर (द्वितीय), 2010 सह-सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

एक नये तीर्थ का उदय

भोपाल (म.प्र.) : आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजी स्वामी के प्रभावना योग से यहाँ भोपाल बस स्टैण्ड से २२ किलोमीटर और विदिशा से ३३ किलोमीटर की दूरी पर भोपाल-विदिशा हाईवे पर दीवानगंज के निकट सुरम्य पहाड़ियों की तलहटी में श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन तीर्थ की भूमि शुद्धि एवं शिलान्यास समारोह आसपास के नगरों व ग्रामों से पधारे २ हजार से अधिक जनमेदिनी की उपस्थिति में दिनांक ५ दिसम्बर को सानन्द सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर न केवल आसपास के गाँवों से अपितु इन्दौर, खण्डवा, जयपुर, उज्जैन, अशोकनगर, सिंरोज, द्रोणगिरि, सागर, ललितपुर, चन्देरी, बासोदा आदि सुदूरवर्ती अनेक नगरों से सैंकड़ों लोग पधारे थे।

शिलान्यास सभा की अध्यक्षता प्रसिद्ध विद्वान डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल ने की और मुख्य अतिथि श्रीमान् लक्ष्मीकान्त शर्मा संस्कृति, जन सम्पर्क एवं उच्च शिक्षा मंत्री म.प्र. सरकार थे। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना भी उपस्थित थे।

ट्रस्ट के अध्यक्ष अशोककुमारजी (सुभाष ट्रांसपोर्ट), कार्याध्यक्ष चौधरी महेन्द्रकुमारजी एवं सचिव देवेन्द्रजी बड़कुल हैं। इनके अतिरिक्त पंडित शिखरचन्दजी विदिशा, मुकेशकुमारजी ढाईद्वीप इन्दौर, अनिलकुमारजी डैडी, श्री राजकुमारजी जैन पुट्टामिल, श्री राजेन्द्रजी मोदी, श्री अजितजी मोदी, श्री प्रणवजी चौधरी, श्री विनोदजी चौधरी आदि हैं। इस अवसर पर जिनमंदिर, स्वाध्याय भवन, विद्वत् निवास, अतिथि निवास, धर्मशाला, मानस्तंभ एवं सीमंधर द्वार - इसप्रकार ७ भवनों के शिलान्यास हुए।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि मंत्री महोदय ने इस महान कार्य में सरकार की ओर से सभी प्रकार से सहयोग देने का आश्वासन दिया। अध्यक्षीय भाषण में डॉ. भारिल्ल ने कहा कि जिसप्रकार जिनवाणी को जन-जन तक पहुँचाने में गुरुदेवश्री कानजीस्वामी की अहम् भूमिका रही है; उसीप्रकार उनके प्रभावना योग में बने इस संकुल से भी तत्त्व के प्रचार-प्रसार को बहुत बल मिलेगा। साथ ही उन्होंने कहा कि बिना एकता के विकास संभव नहीं है, इसलिए समाज को एकता के सूत्र में बांधना होगा। समाज की उन्नति के लिए जो कार्य हो रहे हैं, उसमें सभी लोग बिना किसी भेदभाव के सहयोग करें।

एक दिन पूर्व ४ दिसम्बर २०१० को प्रात: चौक मंदिर की धर्मशाला के खचाखच भरे विशाल हॉल में मुनिराज श्री विश्वलोचनजी महाराज की उपस्थिति में प्रवचन करते हुए डॉ. साहब ने कहा कि महाराजजी से मेरा ४०

(शेष पृष्ठ 4 पर...)

प्रतिष्ठाचार्य प्रशिक्षण शिविर

(दिनाँक 8 से 14 जनवरी 2011)

देश-विदेश में निर्मित होने वाले जिनमन्दिरों की मूलाम्नाय के अनुसार प्रतिष्ठाविधि संपन्न कराने हेतु प्रतिष्ठाचार्यों की बढती हुई मांग की पूर्ति करने के उद्देश्य से तीर्थधाम मङ्गलायतन अलीगढ एवं पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर द्वारा प्रतिष्ठाचार्य शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर का आयोजन दिनाँक 8 जनवरी से 15 जनवरी, 2011 तक श्री टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर में किया जायेगा।

इस शिविर के निर्देशक लोकप्रिय प्रवचनकार तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल रहेंगे। प्रतिष्ठाविधि का प्रायोगिक प्रशिक्षण लोकप्रिय प्रतिष्ठाचार्य ब्र.अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री खनियांधाना, पण्डित रमेशचंदजी बांझल इन्दौर, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर, डॉ.राकेशजी शास्त्री नागपुर, पण्डित संजयजी शास्त्री मङ्गलायतन द्वारा दिया जायेगा।

सम्पूर्ण शिविर योजना का संयोजन पण्डित देवेन्द्रकुमारजी शास्त्री मङ्गलायतन एवं पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर करेंगे।

समाज के प्रतिष्ठाचार्यों, विद्वानों, त्यागीवर्ग एवं प्रबुद्धवर्ग में से जो भी महानुभाव प्रतिष्ठाचार्य प्रशिक्षण शिविर में सम्मिलित होना चाहते हैं, इस शिविर का लाभ लेना चाहते हैं, वे अपने आने की पूर्व सूचना अवश्य देवें। शिविरार्थियों के लिये आवास एवं भोजन की व्यवस्था नि:शुल्क रहेगी।

संपर्क सूत्र -

(1) डॉ. हुकमचंद भारिल्ल, निर्देशक
प्रतिष्ठाचार्य शिक्षण-प्रशिक्षण योजना,
पण्डित टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर-15 (राज.)
फोन - 0141-2707458, 2705581, फैक्स - 2704127

(2) पण्डित देवेन्द्रकुमार जैन, संयोजक,
प्रतिष्ठाचार्य शिक्षण-प्रशिक्षण योजना,
तीर्थधाम मङ्गलायतन, अलीगढ-आगरा मार्ग,
सासनी, जिला-महामायानगर-204216 (उ.प्र.)
मोबाइल - 9997996346

सम्पादकीय – 48

पंचास्तिकाय : अनुशीलन

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

गाथा– ७५

विगत गाथा में कहा है कि पुद्गलकाय के चार भेद हैं – (१) स्कंध, (२) स्कंधदेश, (३) स्कंध प्रदेश और (४) परमाणु।

अब प्रस्तुत गाथा में पुद्गलकाय के पूर्वोक्त चार भेदों का विशेष कथन करते हैं – मूलगाथा इसप्रकार है –

खंधं सयलसमत्थं तस्स दु अद्धं भणंति देसो त्ति।
अद्धद्धं च पदेसो परमाणू चेव अविभागी।।75।।

(हरिगीत)

स्कन्ध पुद्गलपिंड है, अर अर्द्ध उसका देश है।
अर्धार्द्ध को कहते प्रदेश, अविभागी अणु परमाणु है।। 75।।

समस्त पुद्गल पिण्डात्मक वस्तु स्कन्ध है, उसके आधे को देश कहते हैं। आधे से भी आधे को प्रदेश कहते हैं एवं वस्तु के अविभागी अंश को परमाणु कहते हैं।

आचार्य अमृतचन्द्रदेव टीका में कहते हैं कि यह पुद्गलद्रव्य के भेदों का वर्णन है।

अनन्तानन्त परमाणुओं से निर्मित होने पर भी जो एक हो, वह स्कन्ध नामक पर्याय है; उसकी आधी स्कंधदेश नामक पर्याय है, आधी की आधी स्कन्धप्रदेश नामक पर्याय है। इसप्रकार भेद के कारण (पृथक होने के कारण) द्विअणुक स्कन्ध पर्यन्त अनन्त स्कन्ध प्रदेश रूप पर्यायें होती हैं। निर्विभाग एक प्रदेशवाले स्कन्ध का अन्तिम अंश एक परमाणु है।

इस गाथा की टीका में जयसेनाचार्य स्कन्ध, देश, प्रदेश व परमाणुओं की दो प्रकार से व्याख्या करते हैं। प्रथम तो उन्होंने कहा कि अनंत परमाणु पिण्डता का घट-पट आदि रूप जो विवक्षित सम्पूर्ण वस्तु है उसे स्कन्ध संज्ञा है। भेद द्वारा उसके जो पुद्गल विकल्प होते हैं उन्हें निम्नोक्त दृष्टान्त से समझना।

मानलो कि १६ परमाणुओं से निर्मित एक स्कन्ध है अर्थात् पुद्गलपिण्ड है और वह छूटकर उसके टुकड़े होते हैं तो ८ परमाणुओं वाला टुकड़ा देश कहलायेगा। ४ परमाणुओं वाला टुकड़ा (चतुर्थ भाग टुकड़ा) प्रदेश है और अविभागी छोटे से छोटा टुकड़ा परमाणु हैं।

पुनश्च, जिसप्रकार १६ परमाणु के पूर्ण पिण्ड को यदि स्कन्ध संज्ञा है तो १५ से ९ परमाणुओं तक के किसी भी टुकड़े की भी स्कन्ध संज्ञा है तथा ८ परमाणुवाले उसके अर्द्ध भाग के टुकड़े को देश संज्ञा है तो ७ से ५ तक के परमाणु को (टुकड़े) को भी देश संज्ञा ही होगी।

इसीप्रकार ४ परमाणु वाले उसके चतुर्थ भाग रूप टुकड़े को प्रदेश संज्ञा है तो उसे लेकर २ परमाणु तक के किसी भी टुकड़े की प्रदेश संज्ञा है।

कवि हीरानन्दजी कहते हैं कि –

(दोहा)

सकल वस्तु का खंध है, तिसका आधा देस।
चौथाई परदेस है, परमानू निरवेस।।३३७।।

(सवैया इकतीसा)

पुग्गल अनंतानंत भेद संघात वसतैं,
भाग बिना एक कोई खंधनाम सार है।
तामैं चार भेद कहै खंध नाम सारा रूप,
ताका आधा देस नाम प्रगट विचार है।।
आधा देस आधा होइ परदेस नामी सोइ,
अनू नाम अविभागी चौथा परकार है।
एई चारों भेद एक पुग्गल अभेद रूप,
इनहीं का जहाँ तहाँ जग में विथार है।। ३३८।।

(दोहा)

जिनवानी मैं भेद बहु कहवत अगम अपार।
सुलपमति के कारण कहे चार परकार।।३३९।।

भेद और संघात के कारण पुद्गल के अनन्तानन्त भेद हैं अर्थात् अणुओं एवं स्कन्धों के मिलने-बिछुड़ने की अपेक्षा पुद्गल के अनन्त भेद हो जाते हैं तथा दो या दो से अधिक परमाणुओं के मेल से स्कन्ध बनते हैं।

पुद्गल पिण्ड के मुख्यतः चार भेद इसप्रकार हैं – (१) स्कन्ध (२) देश (३) प्रदेश एवं (४) अणु। (१) स्कन्ध (२) स्कन्ध का आधा देश, (३) देश का आधा प्रदेश (४) प्रदेश का अविभागी अंश अणु होता है। जिनवाणी में स्कन्ध के बहुत भेद कहे हैं; परन्तु अल्प मतियों को स्थूलरूप से पुद्गल के उक्त चार ही प्रकार कहे हैं।

इसी बात को गुरुदेवश्री कानजीस्वामी कहते हैं कि (१) **स्कन्ध –** पुद्गल के अनन्त परमाणुओं से बना हुआ एक पिण्ड है। यह दूसरों के द्वारा बनाया नहीं गया है। शरीर, वाणी कर्म के स्कन्ध की अवस्था जीव से नहीं होती। रोटी शाक आदि के स्कन्ध किसीसे हुए नहीं हैं, वे सब भिन्न हैं, स्वतंत्र हैं। ''मैं पर का कर्त्ता नहीं हूँ। मैं तो मात्र ज्ञायक हूँ'' – ऐसा स्वयं को जानने पर परपदार्थ स्वयं ही जानने में आ जाते हैं।

(२) **स्कन्धदेश –** पुद्गल स्कन्ध का आधा भाग स्कन्ध देश है।

(३) **स्कन्धप्रदेश –** स्कन्ध का चौथा भाग स्कन्ध प्रदेश हैं।

(४) **परमाणु –** जिसके दो भाग नहीं हो सकें, उसे पुद्गलपरमाणु कहते हैं।''

तात्पर्य यह है कि स्कन्ध, स्कन्धदेश एवं स्कन्धप्रदेश – इन तीनों के अनन्त-अनन्त भेद हैं। यहाँ भेद की अपेक्षा से अनन्त की बात है। परमाणु में एक ही प्रकार है; यद्यपि परमाणु संख्या में अनन्त हैं, किन्तु भेद एक प्रकार का ही है। ●

गाथा– ७६

विगत गाथा में पुद्गलकाय के चार भेदों का विशेष कथन किया।

अब प्रस्तुत गाथा में पुद्गल के छः भेदों को कहते हैं।

मूलगाथा इसप्रकार है –

बादरसुहुमगदाणं खंधाणं पोग्गलो त्ति ववहारो।
ते होंति छप्पयारा तेलोक्कं जेहिं णिप्पण्णं।।७६।।

(हरिगीत)

सूक्ष्म–बादर परिणमित स्कन्ध को पुद्गल कहा।
स्कन्ध के षट्भेद से त्रैलोक्य यह निष्पन्न है।।७६।।

बादर और सूक्ष्मरूप से परिणत स्कन्धों को पुद्गल कहने का व्यवहार है। वे छह प्रकार के हैं, जिनसे तीन लोक निष्पन्न है।

आचार्य अमृतचन्द्रदेव समयव्याख्या टीका में कहते हैं कि (१) जिनमें संख्यात, असंख्यात, अनन्त आदि षट्स्थानपतित वृद्धि–हानि होती है – ऐसे स्पर्श, रस, गंध, वर्णरूप गुण विशेषों के कारण पूरण–गलन धर्मवाले होने से तथा स्कन्ध पर्याय के आविर्भाव और तिरोभाव की अपेक्षा भी परमाणुओं में पूरण–गलन स्वभाव घटित होने से परमाणु निश्चय से पुद्गल है।

कवि हीरानन्दजी गाथा के उक्त भाव को इसप्रकार कहते हैं –

(दोहा)

बादर सूच्छिम खंध हैं, तिनका पुद्गल नाम।
छह प्रकार तिनकौं कहत, तीन लोक अभिराम।।३४०।।

(सवैया इकतीसा)

रूप–रस–गंध–पर्स षट्गुणी वृद्धि–ह्रास,
पूरै–गलै धर्म तातैं पुद्गल विसेष है।
पुद्गल अनेक एक परजै अनन्य यातैं,
खंध परजाय नाम पुद्गल सलेख है।।
तैसैं थूल सूच्छिम है पुद्गल विभाव तामैं,
भेद षट् तिनही कै लोकरूप वेख है।
नानाकाररूप सृष्टि गोचर अगोचर है,
जानै जिनवाणी वाला मूढ़ कौं अलेख है।। ३४१।।

उक्त पद्यों में कहा है कि बादर–सूक्ष्म पौद्गलिक स्कन्धों का नाम पुद्गल है। ये छः प्रकार के होते हैं।

पुद्गल रूप, रस, गन्ध, स्पर्शवान हैं, षट्गुणी वृद्धि–हानि रूप हैं तथा ये पूरण–गलन स्वभावी होने से पुद्गल कहे जाते हैं।

अनन्तानन्त पुद्गलद्रव्य अनेक पुद्गल परमाणुओं के मिलाप या बिछुड़नेरूप पर्यायों से एक स्थूल स्कन्ध पर्यायरूप अथवा सूक्ष्म स्कन्ध पर्याय रूप होते हैं, जोकि मूलतः षट् भेदरूप हैं।

इसी विषय का स्पष्टीकरण करते हुए गुरुदेवश्री कानजीस्वामी कहते हैं कि ''जो ऐसा मानते हैं कि 'मैं पुद्गलों को परिवर्तित कर सकता हूँ' वे मूढ़ हैं। ऐसा मानने वालों को धर्म नहीं होता।

यहाँ बताया है कि स्कन्धों में घटना–बढ़ना होता रहता है। इसलिए इन्हें पुद्गल कहते हैं तथा परमाणु को पुद्गल कहने का कारण बताते हुए कहा है कि परमाणुओं में स्पर्श, रस, गन्ध, वर्णादि गुणों में षट्गुणी वृद्धि–हानि, होती रहती है, इसलिए परमाणु भी पुद्गल हैं।

एक परमाणु में प्रथम समय में एक गुणी चीकास हो, दूसरे समय में उससे अनन्तगुणी चीकास अर्थात् चिकनाई हो जाती है। दूध के परमाणुओं का स्वाद और स्पर्श आदि किसी थोड़ी मिठास में वृद्धि होकर बहुत मिठास और स्पर्श आदि रूप हो जाती है। कोई शीत परमाणु उष्ण हो जाता है, कोई मीठा परमाणु खट्ठा – यह सब जड़ में होता है।

तात्पर्य यह है कि पुद्गल स्कन्ध अपने स्थूल सूक्ष्म परिणामों के भेदों से तीन लोक में प्रवर्त रहा है। उसके आगम में छः भेद कहे हैं, जो इसप्रकार हैं। (१) बादर–बादर (२) बादर (३) बादर सूक्ष्म (४) सूक्ष्म–बादर (५) सूक्ष्म (६) सूक्ष्म–सूक्ष्म।

१. बादर–बादर : जो पुद्गल पिण्ड टुकड़े होने पर पुनः जुड़ते नहीं हैं। जैसे – पत्थर, लकड़ी आदि।

२. बादर : घी, तैल आदि प्रवाही पदार्थ जोकि पृथक् होने पर पुनः मिल जाते हैं।

३. बादर–सूक्ष्म : जो दिखाई तो दें, परन्तु हाथ वगैरह से पकड़ में नहीं आते। जैसे चन्द्रमा की चाँदनी।

४. सूक्ष्म–बादर : जो वस्तु आँख से नहीं दिखती घ्राण आदि से ग्रहण होती है – जैसे गंध आदि।

५. सूक्ष्म : जो स्कन्ध इन्द्रिय ग्राह्य नहीं है, ऐसी कर्मवर्गणायें।

६. सूक्ष्म–सूक्ष्म : कर्म वर्गणाओं से भी अतिसूक्ष्म दो परमाणुओं का स्कन्ध, तीन अणुओं का स्कन्ध आदि।

इसप्रकार इस गाथा में स्कन्धों के ६ भेद कहे। यहाँ ज्ञातव्य है कि ये भेद स्कन्ध के हैं। गोम्मटसार में जो पुद्गल के ६ भेद कहे, उसमें पाँच बोल तो – ऊपर कहे अनुसार ही हैं, छटवाँ भेद एक परमाणु का लिया है।''[१]

इसप्रकार इस गाथा में पुद्गल द्रव्य का सामान्य कथन किया है।●

मुक्त विद्यापीठ के छात्र ध्यान दें !

२६ दिसम्बर परीक्षा के प्रश्नपत्र डिस्पेच

मुक्त विद्यापीठ के द्विवर्षीय विशारद एवं त्रिवर्षीय सिद्धांत विशारद परीक्षा के द्वितीय सेमेस्टर परीक्षा के प्रश्नपत्र संबंधित सभी परीक्षार्थियों को डाक द्वारा भेजे जा चुके हैं। जिन्हें २३ दिसम्बर तक भी नहीं मिलें हो, वे सूचना भेजकर परीक्षा बोर्ड कार्यालय से मंगा सकते हैं।

– प्रबंधक–ओ.पी.आचार्य

शीतकालीन परीक्षा २०११ के अध्यापक ध्यान देवें !

श्री वीतराग–विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड, ए–४, बापूनगर, जयपुर की शीतकालीन परीक्षायें २९, ३०, ३१ जनवरी २०११ को होने जा रही है। जिन केन्द्राध्यक्षों ने अभी तक छात्र प्रवेशफार्म भरकर नहीं भेजे हैं, कृपया वे तत्काल भेजें, ताकि समय रहते रोल नं. प्रश्नपत्र आदि सामग्री समय पर पहुंच सकें।

– प्रबंधक–ओ.पी.आचार्य

१. श्री सद्गुरु प्रवचन प्रसाद, नं. १६६, गाथा ७६, पृष्ठ –१३१८

डॉ. भारिल्ल का अभिनन्दन

मेरठ (उ.प्र.) : यहाँ दिनाँक 12 व 13 दिसम्बर को अ.भा.जैन युवा फैडरेशन के तत्त्वावधान में भारतीय जैन मिलन के जैन जागरण वर्ष के अन्तर्गत जैन मिलन के क्षेत्र सं. 5 द्वारा तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का विशाल स्तर पर अभिनन्दन किया गया।

इसके पूर्व श्री दिगम्बर जैन मंदिर तीरगरान में समयसार का सार विषय पर दोनों समय डॉ. भारिल्ल के विशेष व्याख्यानों के साथ पण्डित सोनूजी शास्त्री फिरोजाबाद एवं पण्डित अंकितजी शास्त्री छिन्दवाड़ा के प्रवचनों का लाभ भी सभी को प्राप्त हुआ।

दिनाँक 13 दिसम्बर को आयोजित अभिनन्दन समारोह का प्रारंभ जैन मिलन महिला सिद्धार्थ की महावीर वन्दना से हुआ।

जैन मिलन की महिलाओं द्वारा प्रस्तुत स्वागत गीत के उपरांत श्री सुरेशजी जैन सर्राफ ने डॉ. भारिल्ल का जीवन परिचय प्रस्तुत किया। तत्पश्चात् भारतीय जैन मिलन द्वारा डॉ. भारिल्ल को **जैन मिलन रत्न** की उपाधि से विभूषित किया गया एवं प्रशस्ति–पत्र भेंटकर अभिनन्दन किया गया। प्रशस्ति–पत्र का वाचन श्रीमती बीना जैन ने किया।

मंचासीन अतिथियों में डॉ. भारिल्ल के अतिरिक्त क्षेत्र सं. 5 के अध्यक्ष श्री प्रभाषजी जैन, जैन मिलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुरेशजी जैन रितुराज, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री जिनेन्द्रकुमारजी जैन, संरक्षक श्री रवीन्द्रजी जैन एडवोकेट, श्री भूषणस्वरूपजी जैन एवं पार्श्वनाथ टाइम्स के सम्पादक श्री सुभाषचन्दजी जैन उपस्थित थे।

इस अवसर पर क्षेत्र सं. 5 के अन्तर्गत आने वाली 57 शाखाओं के पदाधिकारियों द्वारा भी माल्यार्पण व प्रशस्ति–पत्र देकर डॉ. भारिल्ल का सम्मान किया। इसी क्रम में डॉ. भारिल्ल के नवरचित ग्रन्थ 'नियमसार अनुशीलन भाग 2' का विमोचन सौरभ जैन रोहित जैन परिवार द्वारा किया गया एवं सभी साधर्मियों को पुस्तकें भेंट की गयी।

समारोह में लगभग 400 लोगों की उपस्थिति में मुख्य वक्ता के रूप में डॉ. भारिल्ल ने णमोकार महामंत्र पर विशेष व्याख्यान दिया।

(पृष्ठ 1 का शेष...)

वर्ष पुराना संबंध है और इस अवसर पर महाराजश्री की उपस्थिति से हमारे इस नये तीर्थ को बल मिलेगा।

महाराजश्री ने भी अपने भाषण में कहा कि मेरा परिचय डॉ. साहब से ४० नहीं, ४५ वर्ष पुराना है। जब आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी ई. सन् १९७० में जयपुर के शिविर में २० दिन के लिए पधारे, तब मैं भी उस शिविर में था और बालबोध का प्रशिक्षण भी मैंने लिया था। डॉ. साहब से मैंने बालबोध पाठमालायें व वीतराग–विज्ञान पाठमालायें पढ़ी हैं। धर्मज्ञान के रूप में आज जो भी मेरे पास है, वह सब डॉ. साहब का ही दिया हुआ है। आपके इस कार्य में मेरा पूरा आशीर्वाद है। इससे पूर्व ब्र. सुमतप्रकाशजी का प्रवचन हुआ।

उसी दिन शाम को कोहेफिजा जिनमंदिर के हॉल में ब्र. सुमतप्रकाशजी और डॉ. साहब के प्रवचन हुए।

इसप्रकार यह कार्यक्रम आशा से अधिक सफलता के साथ सम्पन्न हुआ। आर्थिक सहयोग भी भरपूर मिला है, अत: यह कार्य तीव्रगति से आरंभ होगा।

आगामी कार्यक्रम

उदयपुर (राज.) : यहाँ सामुदायिक भवन, हिरणमगरी सेक्टर–14 में अ.भा.जैन युवा फैडरेशन राजस्थान प्रदेश का तृतीय कार्यकर्ता प्रशिक्षण दिनाँक 3 जनवरी 2011 को आयोजित किया जा रहा है।

कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षण फैडरेशन के निदेशक तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल देंगे।

श्री जिनेन्द्रजी शास्त्री (राज.प्रदेश अध्यक्ष) ने बताया कि कार्यक्रम में वक्ताओं के अन्तर्गत श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई (राष्ट्रीय महामंत्री), श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर (राष्ट्रीय मंत्री) एवं पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर होंगे। अध्यक्ष के रूप में श्री गुलाबचंदजी कटारिया (पूर्व गृहमंत्री एवं विधायक), मुख्य अतिथि के रूप में श्री मुकेशजी जैन ढाईद्वीप जिनायतन इन्दौर एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री आई. वी. त्रिवेदी (कुलपति–मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर) व श्री प्रदीपजी चौधरी किशनगढ उपस्थित रहेंगे।

इस अवसर पर राजस्थान के सभी नवीन पदाधिकारियों का शपथग्रहण भी होगा। सभी शाखाओं के अध्यक्ष, मंत्री, पदाधिकारियों को सपत्नीक पधारने का आमंत्रण है। **– डॉ. महावीरप्रसाद शास्त्री**

पत्रिका विमोचन संपन्न

उदयपुर (राज.) : यहाँ आदर्श नगर चन्द्रप्रभ दिगम्बर जैन मंदिर गायरियावास में चन्द्रप्रभ कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन चेरिटेबल ट्रस्ट के तत्त्वावधान में दिनांक 14 जनवरी से 20 जनवरी, 2011 तक आयोजित होने वाले नेमिनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव की आमंत्रण पत्रिका का विमोचन दिनांक 12 दिसम्बर, 2010 को संपन्न हुआ।

कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री कैलाशचन्दजी सोनी ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री अर्जुनलाल काला एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में समाजसेवी श्री ताराचंदजी जैन, श्री दीपचंदजी गांधी, श्री चन्दनलालजी दोशी, श्री मदनलालजी कैरोत, श्री ललितजी कीकावत उपस्थित थे।

पत्रिका का विमोचन श्री भागचंदजी कालिका ने एवं पत्रिका – वाचन पण्डित खेमचंदजी जैन ने किया। विमोचन के पूर्व नेमिनाथ विधान का आयोजन डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री, पण्डित अश्विनजी शास्त्री एवं पण्डित सचिनजी शास्त्री द्वारा संपन्न हुआ।

इस अवसर पर श्री जिनेन्द्रजी शास्त्री (प्रदेश अध्यक्ष–अ.भा.जैन युवा फैडरेशन), श्री राकेशजी जैन, श्री रोहितजी शास्त्री, श्री कमलजी गदिया, श्री सुजानमलजी गदिया, श्री हीरालालजी अखावत, श्री रंगलालजी बोहरा, श्री कचरूलालजी मेहता, श्री टीकमचंदजी लिखमावत, श्री पंकजजी कोठारी आदि महानुभाव उपस्थित थे।

कार्यक्रम का संचालन पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा ने एवं आभार प्रदर्शन श्री राजमलजी गोदडोत ने किया।

बालचंद इन्स्टीट्यूट का विज्ञापन

मोक्षमार्ग प्रकाशक का सार

66 सत्रहवाँ प्रवचन – डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

इस पर कोई कह सकता है कि यदि धर्म से ये लाभ भी मिल जावे तो क्या हानि है ? ऐसे लोगों को लक्ष्य में लेकर पण्डितजी कहते हैं –

''यहाँ कोई कहे – हिंसादि द्वारा जिन कार्यों को करते हैं; वही कार्य धर्म साधन द्वारा सिद्ध किये जायें तो बुरा क्या हुआ ? दोनों प्रयोजन सिद्ध होते हैं ?

उससे कहते हैं कि पापकार्य और धर्मकार्य का एक साधन करने से पाप ही होता है। जैसे – कोई धर्म का साधन चैत्यालय बनवाये और उसी को स्त्री–सेवनादि पापों का भी साधन करे तो पाप ही होगा। हिंसादि द्वारा भोगादिक के हेतु अलग मकान बनवाता है तो बनवाये; परन्तु चैत्यालय में भोगादि करना योग्य नहीं है।

उसीप्रकार धर्म का साधन पूजा, शास्त्रादिक कार्य है; उन्हीं को आजीवकादि पाप का भी साधन बनाये तो पापी ही होगा। हिंसादि से आजीविकादि के अर्थ व्यापारादि करता है तो करे, परन्तु पूजादि कार्यों में तो आजीविकादि का प्रयोजन विचारना योग्य नहीं है।

प्रश्न –यदि ऐसा है तो मुनि भी धर्मसाधन कर पर–घर भोजन करते हैं तथा साधर्मी साधर्मी का उपकार करते–कराते हैं सो कैसे बनेगा ?

उत्तर – वे आप तो कुछ आजीवकादि का प्रयोजन विचारकर धर्म–साधन नहीं करते। उन्हें धर्मात्मा जानकर कितने ही स्वयमेव भोजन उपकारादि करते हैं, तब तो कोई दोष है नहीं। तथा यदि आप भोजनादिक का प्रयोजन विचार कर धर्म साधता है तो पापी है ही।

जो विरागी होकर मुनिपना अंगीकार करते हैं, उनको भोजनादिक का प्रयोजन नहीं है। शरीर की स्थिति के अर्थ स्वयमेव भोजनादि कोई दे तो लेते हैं, नहीं तो समता रखते हैं, संक्लेशरूप नहीं होते।

तथा अपने हित के अर्थ धर्म साधते हैं। उपकार करवाने का अभिप्राय नहीं है और आपके जिसका त्याग नहीं है, वैसा उपकार कराते हैं।

कोई साधर्मी स्वयमेव उपकार करता है तो करे, और यदि न करे तो उन्हें कुछ संक्लेश नहीं होता – सो ऐसा तो योग्य है।

परन्तु आप ही आजीविकादि का प्रयोजन विचारकर बाह्यधर्म का साधन करे; जहाँ भोजनादिक उपकार कोई न करे, वहाँ संक्लेश करे, याचना करे, उपाय करे, अथवा धर्म साधन में शिथिल हो जाये; तो उसे पापी ही जानना।

इसप्रकार सांसारिक प्रयोजनसहित जो धर्म साधते हैं; वे पापी भी हैं और मिथ्यादृष्टि तो हैं ही।

इसप्रकार जिनमतवाले भी मिथ्यादृष्टि जानना।[१]''

यहाँ एक प्रश्न हो सकता है कि यदि ऐसा है तो फिर जैनदर्शन के अध्ययन–अध्यापन की व्यवस्था कैसे होगी ?

इसमें क्या परेशानी है। विश्वविद्यालय में अनेक विषयों का अध्ययन–अध्यापन होता है; उनमें जैनदर्शन भी पढाया जाता है।

जिसप्रकार उचित निर्वाहव्यय लेकर अन्य विषय पढाये जाते हैं; उसीप्रकार यह भी पढाया जा सकता है। इसमें कोई आपत्ति नहीं है।

पढानेवालों की बात तो बहुत दूर, शिविरों में पढनेवालों के भोजनादि की भी निशुल्क व्यवस्था रहती है और रहनी भी चाहिए; क्योंकि अध्ययन–अध्यापन करने–करानेवाले भोजनादि की व्यवस्था में उलझे रहेंगे तो फिर पूरे समय अध्ययन–अध्यापन कैसे करेंगे।

यदि धर्म का प्रचार–प्रसार करना है तो उसमें सभी प्रकार के लोगों की आवश्यकता है। पढनेवाले चाहिए, पढानेवाले चाहिए, लिखनेवाले चाहिए, उसे छपानेवाले चाहिए, उन छपे ग्रन्थों को जन–जन तक पहुँचाने वाले चाहिए, उठाने–रखनेवाले चाहिए।

जबतक ये सभी लोग दिन–रात पूरी तरह समर्पित लोग नहीं होंगे; तबतक कोई भी कार्य, कुशलता पूर्वक सम्पन्न नहीं हो सकता।

जो लोग उक्त कार्यों में से किसी भी कार्य के लिए पूरी तरह समर्पित होंगे; उनके निर्वाहव्यय की उचित व्यवस्था भी करनी होगी।

इसमें ऐसा कुछ नहीं है कि जिसमें कोई लौकिक प्रयोजन की सिद्धि के लिए जैनधर्म स्वीकार कर रहा हो या फिर उससे अपने उचित–अनुचित लौकिक कार्यों को सिद्ध कर रहा हो।

उक्त कार्यों में प्रश्नचिन्ह लगाकर हम प्रतिभाओं को इस क्षेत्र में आने से रोकते हैं। ऐसा करनेवालों को यह पता नहीं है कि वे अनजाने में ही जैनदर्शन का कितना अहित कर रहे हैं।

इसप्रकार अबतक कुलधर्म के रूप में जैनधर्म को स्वीकार करनेवाले व्यवहाराभासी, परीक्षा किये बिना मात्र आज्ञा से जैनधर्म को स्वीकार करनेवाले व्यवहाराभासी और सांसारिक प्रयोजन से जैनधर्म को स्वीकार करनेवाले व्यवहाराभासी लोगों की तथा महापुरुषों की संगति एवं देखा–देखी जैनधर्म को धारण करनेवाले लोगों की प्रवृत्ति पर विचार किया।

पण्डितजी कहते हैं कि उक्त व्यवहाराभासियों में तो धर्मबुद्धि ही नहीं है; परन्तु कुछ ऐसे व्यवहाराभासी भी इस जगत में हैं, जिन्होंने धर्मबुद्धि से जिनधर्म को धारण किया है।

अब अगले प्रवचन में उन धर्मबुद्धि से जैनधर्म धारण करनेवाले व्यवहाराभासी गृहीत मिथ्यादृष्टियों की चर्चा करेंगे। ●

१. मोक्षमार्गप्रकाशक, सातवाँ अधिकार, पृष्ठ २१९

अठारहवाँ प्रवचन

मोक्षमार्गप्रकाशक का सातवाँ अधिकार चल रहा है। इसमें निश्चयाभासी का प्रकरण तो हो चुका है; परन्तु अभी व्यवहाराभासी का प्रकरण चल रहा है। इसमें भी कुल–अपेक्षा धर्मधारक, परीक्षारहित आज्ञानुसारी धर्मधारक एवं सांसारिक प्रयोजन से धर्म धारण करनेवाले व्यवहारभासी गृहीत मिथ्यादृष्टियों की चर्चा हो चुकी है; अब धर्मबुद्धि से धर्मधारक व्यवहारभासी मिथ्यादृष्टियों की चर्चा आरंभ करते हैं।

इनकी चर्चा आरंभ करते हुए पण्डितजी लिखते हैं –

''तथा कितने ही धर्मबुद्धि से धर्म साधते हैं, परन्तु निश्चयधर्म को नहीं जानते; इसलिए अभूतार्थरूप धर्म को साधते हैं।

वहाँ व्यवहारसम्यग्दर्शन–ज्ञान–चारित्र को मोक्षमार्ग जानकर उनका साधन करते हैं।[१]''

यह तो आप जानते ही हैं कि शास्त्रों में सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र की एकता को मोक्षमार्ग कहा है[२] तथा निश्चयमोक्षमार्ग और व्यवहारमोक्षमार्ग – इसप्रकार मोक्षमार्ग का निरूपण दो प्रकार से किया गया है।

निश्चयमोक्षमार्ग भूतार्थ है और व्यवहारमोक्षमार्ग अभूतार्थ है।[३]

ये धर्मबुद्धि से धर्मधारक व्यवहाराभासी मिथ्यादृष्टि लोग निश्चय–मोक्षमार्ग को तो पहिचानते नहीं हैं और अभूतार्थ (असत्यार्थ) व्यवहार–मोक्षमार्ग की साधना करने लगते हैं। अत: यहाँ यह समझाना अभीष्ट है कि बिना निश्चय के व्यवहार सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र की साधना करनेवाले इन लोगों की प्रवृत्ति कैसी होती है और वह क्यों ठीक नहीं है। सबसे पहले ये लोग व्यवहारसम्यग्दर्शन की साधना किसप्रकार करते हैं ह्न यह स्पष्ट करते हैं –

''वहाँ शास्त्र में देव, गुरु व धर्म की प्रतीति करने से सम्यक्त्व होना कहा है। ऐसी आज्ञा मानकर अरहंत देव, निर्ग्रन्थ गुरु व जैनशास्त्रों के अतिरिक्त औरों को नमस्कारादि करने का त्याग किया है; परन्तु उनके (अरहंत देव, निर्ग्रन्थ गुरु और जैन शास्त्रों के) गुण–अवगुण की परीक्षा नहीं करते अथवा परीक्षा भी करते हैं तो तत्त्वज्ञानपूर्वक सच्ची परीक्षा नहीं करते, बाह्य लक्षणों द्वारा परीक्षा करते हैं।

ऐसी प्रतीति से सुदेव–गुरु–शास्त्र की भक्ति में प्रवर्तते हैं।[४]''

'सच्चे देव–शास्त्र–गुरु की श्रद्धा को सम्यग्दर्शन कहते हैं।'[५] उक्त आगम वचन को आधार बनाकर ये लोग अरहंत देव, निर्ग्रन्थ गुरु और जैन शास्त्रों को छोड़कर अन्य देवादि को तो नमस्कार नहीं करते; परन्तु सच्चे देव–शास्त्र–गुरु की भी परीक्षा नहीं करते; यदि करते भी हैं तो तत्त्वज्ञानपूर्वक सच्ची परीक्षा नहीं करते, बाह्य लक्षणों द्वारा परीक्षा करके संतुष्ट हो जाते हैं।

इसप्रकार ये लोग उक्त प्रतीति के साथ अरहंतादि की भक्ति करते हैं। यद्यपि ये लोग परीक्षाप्रधानी हैं, देव–शास्त्र–गुरु को परीक्षा करके ही स्वीकार करते हैं; तथापि इनकी परीक्षा में सही निर्णय क्यों नहीं हो पाता – इस बात की चर्चा करते हुए सबसे पहले देव के संदर्भ में बात करते हैं –

''वहाँ अरहन्त देव हैं, इन्द्रादि द्वारा पूज्य हैं, अनेक अतिशय सहित हैं, क्षुधादिदोष रहित हैं, शरीर की सुन्दरता को धारण करते हैं, स्त्री–संगमादि रहित हैं, दिव्यध्वनि द्वारा उपदेश देते हैं, केवलज्ञान द्वारा लोकालोक को जानते हैं, काम–क्रोधादिक नष्ट किये हैं – इत्यादि विशेषण कहे हैं। वहाँ इनमें से कितने ही विशेषण पुद्गलाश्रित हैं और कितने ही जीवाश्रित हैं, उनको भिन्न–भिन्न नहीं पहिचानते।

जिसप्रकार कोई असमानजातीय मनुष्यादि पर्यायों में जीव–पुद्गल के विशेषणों को भिन्न–भिन्न न जानकर मिथ्यादृष्टि धारण करता है; उसीप्रकार यह भी असमानजातीय अरहन्त पर्याय में जीव–पुद्गल के विशेषणों को, भिन्न–भिन्न न जानकर मिथ्यादृष्टि धारण करता है।

तथा जो बाह्य विशेषण हैं, उन्हें जानकर उनके द्वारा अरहन्तदेव को महंतपना विशेष मानता है और जो जीव के विशेषण हैं, उन्हें यथावत् न जानकर उनके द्वारा अरहंतदेव को महंतपना आज्ञानुसार मानता है अथवा अन्यथा मानता है; क्योंकि यथावत् जीव के विशेषण जाने तो मिथ्यादृष्टि न रहे।[१]''

देखो, पण्डितजी कह रहे हैं कि अरहंतदेव की जिन विशेषताओं की चर्चा ऊपर की गई; उनमें कुछ विशेषण तो पुद्गलाश्रित है और कुछ विशेषण आत्माश्रित हैं। केवलज्ञान द्वारा लोकालोक को जानना और काम–क्रोधादि नष्ट करना – ये विशेषण तो आत्माश्रित हैं; क्योंकि ये आत्मा की निर्मल पर्याये हैं और अरहंतदेव की वीतरागता और सर्वज्ञता को प्रगट करते हैं। तथा शरीर की सुंदरता और दिव्यध्वनि द्वारा उपदेश – ये विशेषण पुद्गलाश्रित हैं; क्योंकि ये पौद्गलिक आहार वर्गणा और भाषा वर्गणा के कार्य हैं।

अरहंतदेव की पूज्यता का आधार तो उनकी वीतरागता और सर्वज्ञता है; देह की सुंदरता और हित-मित-प्रिय वचन नहीं; किन्तु इस व्यवहाराभासी मिथ्यादृष्टि को वीतरागता और सर्वज्ञता की तो पहिचान ही नहीं है; यह तो शरीर और वाणी संबंधी अतिशयों से प्रभावित होकर उनकी पूजा करने लगता है।

१. मोक्षमार्गप्रकाशक, सातवाँ अधिकार, पृष्ठ २२१
२. आचार्य उमास्वामी : तत्त्वार्थसूत्र, अध्याय १, सूत्र १
३. आचार्य कुन्दकुन्द, समयसार, गाथा ११
४. मोक्षमार्गप्रकाशक, सातवाँ अधिकार, पृष्ठ २२१
५. आचार्य समन्तभद्र : रत्नकरण्ड श्रावकाचार, छन्द..

१. मोक्षमार्गप्रकाशक, सातवाँ अधिकार, पृष्ठ २२१

यदि उनकी वीतरागता का सही ज्ञान हो जावे तो फिर उनसे कुछ माँगने का भाव नहीं आ सकता और सर्वज्ञता का सही ज्ञान हो जावे तो यह समझते देर नहीं लगेगी कि होगा तो वही, जो उनके ज्ञान में झलका होगा। ऐसी श्रद्धा होते ही जगत में फेरफार करने की बुद्धि समाप्त हो जावेगी; पर वीतरागता और सर्वज्ञता का सही ज्ञान नहीं होने से माँगने की वृत्ति और जगत में फेरफार करने की बुद्धि समाप्त नहीं होती।

इसप्रकार हम देखते हैं कि इनकी भी वही स्थिति है, जो स्थिति मनुष्यादि पर्याय में एकत्वबुद्धि धारण करनेवाले सामान्य मिथ्यादृष्टियों की होती है।

किसी विद्वान का अभिनंदन हो रहा हो; उस समय हम उसकी विद्वत्ता की तो चर्चा न करें; पर धोती-कुर्ता और टोपी का बखान करने लगें; तो क्या यह उचित होगा ? पर बातें तो ऐसी ही होती हैं कि तन पर धवल वस्त्र, एकदम झकाझक धोती-कुर्ता और नोकदार टोपी हमेशा उनके तन पर रहती है। क्या इन धोती-कुर्ता और टोपी के कारण ही उनका अभिनंदन हो रहा है या विद्वत्ता के कारण ? पर सामान्यजन तो ड्रेस से ही आकर्षित होते हैं; उसीप्राकर ये व्यवहाराभासी भी बाह्य चमत्कारों से प्रभावित होकर अरहंतादि की भक्ति करते हैं।

इन व्यवहाराभासियों जैसी बाह्यदृष्टि के कारण ही आज शास्त्रों का अध्येता आत्मानुभवी विद्वान बड़ा पण्डित नहीं माना जाता; अपितु वह नाचने-गानेवाला, चन्दा करने में चतुर, तत्त्वज्ञान से अनभिज्ञ पेशेवर पण्डित ही बड़ा पण्डित माना जाता है। पण्डित की बात तो जाने दो ये व्यवहाराभासी तो अरहंत भगवान को भी सर्वज्ञता और वीतरागता के कारण नहीं, बाह्य चमत्कारों के कारण ही महान मानते हैं।

(क्रमशः)

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

24 दिसम्बर से 1 जनवरी	इन्दौर(मालवा)	फैडरेशन यात्रा
2 से 4 जनवरी, 2011	उदयपुर	वेदी प्रतिष्ठा
15 से 20 जनवरी, 2011	उदयपुर	पंचकल्याणक
28 जनवरी से 4 फरवरी	भिण्ड	पंचकल्याणक

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें-
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph.: 022-26130820, 26104912, E-Mail- info@vitragvani.com

शोक समाचार

1. जयपुर (राज.) निवासी श्रीमती कमलादेवी बैनाड़ा ध.प. स्व.श्री भंवरलालजी बैनाड़ा का दिनाँक 2 नवम्बर को 90 वर्ष की आयु में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप बहुत स्वाध्यायी थीं। जयपुर में लगने वाले प्रत्येक शिविर में आकर लाभ लेती थीं। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक हेतु 2000/- रुपये प्राप्त हुये।

2. भिण्ड (म.प्र.) निवासी श्रीमती मैनादेवी जैन माताश्री पण्डित अनिलकुमारजी जैन (इन्जीनियर) भोपाल का दिनाँक 28 नवम्बर को 75 वर्ष की आयु में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक हेतु 201/- रुपये प्राप्त हुये हैं।

दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हों - यही भावना है।

हार्दिक बधाई !

संभव शास्त्री

संतोष शास्त्री

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय, जयपुर के स्नातक **श्री संभवजी शास्त्री** पुत्रश्री शीतलचंदजी जैन नैनधरा (म.प्र.) एवं **श्री संतोषकुमारजी शास्त्री** पुत्र श्री पवनकुमारजी जैन बकस्वाहा (म.प्र.) का विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यू.जी.सी.) द्वारा आयोजित नेट - जून 2010 परीक्षा में जे.आर.एफ. हेतु चयन हुआ है।

महाविद्यालय एवं जैनपथप्रदर्शक परिवार आपके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है।

जागरण

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान देखिये ह्न प्रतिदिन प्रातः 6.40 से 7.00 बजे तक

प्रकाशन तिथि : 13 दिसम्बर 2010

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा**, डबल एम.ए.(जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैन दर्शन)
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : info@ptst.in **फैक्स :** (0141) 2704127